संस्कृत कैसे सीखें ?

How to Learn Sanskrit?

विशाल गौतम[1], योगेश शर्मा[2]

Vishal Gautam[1], Yogesh Sharma[2]

[1]उच्च माध्यमिक शिक्षक (संस्कृत) – शा.उ.मा.वि.सोई कला, श्योपुर, म.प्र.

[2]सह आचार्य – इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली

Email ID - Vishalgautam928@gmail.com Email ID - ycsharma2000@yahoo.co.in

संस्कृत भाषा भारतीय जनमानस की प्राणस्वरूप भाषा है। सभी भारतीयों के मन में संस्कृत के प्रति अतिशय अनुराग होने के कारण वे संस्कृतभाषा सीखना भी चाहते हैं परन्तु सीखने के उचित आयामों के अभाव के कारण वे संस्कृत से प्रायः दूर ही रह जाते हैं। उनके मन में अनेक प्रकार की शङ्काएँ उत्पन्न होती हैं। जैसे संस्कृत कहाँ से सीखें? कैसे सीखें? सीखने की प्रक्रिया क्या है? संस्कृत भाषा के मूल घटक कौन–कौन से है? संस्कृत की प्रारम्भिक ईकाई क्या है? तथा संस्कृत की वास्तविक प्रौढता का लक्षण क्या है? इत्यादि प्रश्नों का समावेश करते हुए यह लेख प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा
(भारत की दो प्रतिष्ठा हैं – संस्कृत एवं संस्कृति)

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषा है। भारत को जानने के लिए संस्कृत को जानना आवश्यक है। भारत का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में संस्कृत से अवश्य ही जुड़ा रहता है। भारत में सभी संस्कार प्रायः संस्कृत भाषा में ही होते है इसलिए कहा जा सकता हैं कि संस्कृत भाषा भारत का आधार स्तम्भ है।

संस्कृत भाषा के चार सोपान हैं – श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन। सर्वप्रथम भाषा जिज्ञासु को अधिक से अधिक संस्कृत भाषा सुननी चाहिए, फिर धीरे धीरे वैसे ही बोलने का प्रयास करना चाहिए। प्रारम्भिक अवस्था में व्याकरण के ज्ञान के बिना ही भाषा को सीखना चाहिए। वर्तमान में इसके लिए संस्कृत सम्भाषण शिविर सर्वोत्तम माध्यम है। किसी न किसी माध्यम से संस्कृत को सामान्य रूप से समझने व बोलने की योग्यता विकसित हो जाने से व्यक्ति के अन्दर भाषा के प्रति अनुराग बढ़ जाता है। वह भाषा को और अच्छे से जानने की इच्छा करता है। यही स्थिति उसको भाषाशिल्पज्ञान (व्याकरणज्ञान) की ओर प्रेरित करती है और वह निरन्तर उसकी ओर आगे बढ़ता रहता है।

संस्कृत भाषा के श्रवण तथा भाषण कौशल के विकसित हो जाने के पश्चात् जिज्ञासु को लेखन तथा पठन कौशल को विकसित करना चाहिए। वस्तुतः भाषिक संरचना के मुख्यरूप से तीन चरण होते हैं – वर्ण, शब्द और वाक्य। अतः सर्वप्रथम संस्कृत भाषा की लिपि को समझने के लिए देवनागरी लिपि की वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण को कई बार बोल–बोलकर तथा लिखकर अच्छे से अभ्यास करना चाहिए। इसके बाद वर्णों के उच्चारण स्थान, आभ्यन्तरप्रयत्न तथा बाह्यप्रयत्नों को अच्छे से जानना चाहिए। संस्कृत वर्णमाला इस प्रकार है –

स्वर (Vowel)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ
a	ā	i	ī	u	ū	ṛ	ṝ	ḷ	e	Ai	o	Au

स्वराश्रितौ (Vowel Dependent)

ं – अनुस्वारः ः – विसर्गः

ṃ –Anusvāraḥ ḥ – visargaḥ

व्यञ्जन (Consonants)

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
k	kh	g	gh	ṅ
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
c	ch	j	jh	ñ
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
ṭ	ṭh	ḍ	ḍh	ṇ
त्	थ्	द्	ध्	न्
t	th	d	dh	n
प्	फ्	ब्	भ्	म्
p	ph	b	bh	m
य्	र्	ल्	व्	
y	r	l	v	
श्	ष्	स्	ह्	
ś	ṣ	s	h	

उच्चारण स्थान–

कण्ठ– अ आ क् ख् ग् घ् ङ् ह् विसर्ग (:)

तालु– इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्

ओष्ठ– उ ऊ प् फ् ब् भ् म्

मूर्धा – ऋ ॠ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्

दन्त – ऌ त् थ् द् ध् न् ल् स्

कण्ठतालु– ए ऐ

कण्ठोष्ठ– ओ औ

दन्तोष्ठ– व्

वर्णों के उच्चारण और लेखन का सम्यक् ज्ञान होने के पश्चात् व्यक्ति को शब्द ज्ञान की ओर बढ़ना चाहिए। निरुक्तकार यास्क के अनुसार शब्दों के चार प्रकार होते हैं – नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात। नाम से तात्पर्य है संज्ञा व सर्वनाम शब्द, आख्यात अर्थात् क्रियावाचक शब्द, उपसर्ग धातु (क्रिया) के पूर्व लगकर अर्थ प्रकाशन करते हैं और निपात से तात्पर्य है अव्ययवाची शब्द और वाक्य पूरक शब्द। इन चार प्रकार के शब्दों में से सर्वप्रथम व्यवहार में आने वाले शब्दों का स्मरण करना चाहिए उसके पश्चात् अन्य शब्दों का भी स्मरण करना चाहिए। न्यूनतम 1000 शब्दों (600 संज्ञा शब्द 150 क्रियावचक शब्द 250 अव्ययवाची शब्द) के स्मरण के पश्चात् संस्कृत भाषा के शब्दार्थों का अवबोध सरलता से हो जाता है। इस प्रक्रिया में शब्दरूपों और पाँच लकारों में धातुरूपों का भी स्मरण करना चाहिए। शब्दों के स्मरण के साथ साथ वर्णों के मिलान की प्रक्रिया हेतु क्रमशः निम्नलिखित सन्धियों का अभ्यास करना चाहिए–

स्वरसन्धि (अच् सन्धि) –

दीर्घसन्धि, गुणसन्धि, वृद्धिसन्धि, यण्सन्धि, अयादिसन्धि, पूर्वरूपसन्धि, पररूपसन्धि, प्रकृतिभावसन्धि।

यथा–

दीर्घ सन्धि – विद्या + आलयः = विद्यालयः

गुण सन्धि – गण + ईशः = गणेशः

वृद्धि सन्धि – तथा + एव = तथैव (उसी प्रकार)

अयादि सन्धि – यदि + अपि = यद्यपि

व्यञ्जनसन्धि–

श्चुत्वसन्धि, ष्टुत्वसन्धि, जश्त्वसन्धि, चर्त्वसन्धि, अनुनासिकसन्धि, अनुस्वारसन्धि, अनुस्वारपरसवर्णसन्धि, पूर्वसवर्णसन्धि, परसवर्णसन्धि, लत्वसन्धि, छत्वसन्धि, ङमुडागमसन्धि।

यथा –

श्चुत्वसन्धि– हरिस् + शेते = हरिश्शेते (हरि सोते हैं)

ष्टुत्व सन्धि– हरिस् + षष्ठः = हरिषष्ठः (हरि छठे हैं)

जशत्व सन्धि– वाक् + ईशः = वागीशः (वाणी का ईश)

चर्त्व सन्धि– तद् + पुरुषः = तत्पुरुषः (वह पुरुष)

विसर्गसन्धि –

विसर्ग के स्थान पर स्, विसर्ग के आगे चवर्ग रहने पर श्, विसर्ग के आगे टवर्ग रहने पर ष्, विसर्ग के आगे क् ख् व प् फ् रहने पर जिह्वामूलीय व उपध्मानीय, विसर्ग उत्वसन्धि, विसर्गलोप सन्धि।

यथा–

विसर्ग के स्थान पर स् – विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता (भगवान् विष्णु रक्षक हैं)

विसर्ग के आगे चवर्ग रहने पर श् – निः + चय = निश्चय, इसी प्रकार– दुश्चरित्र, निश्छल

उत्व सन्धि – मनः + हर = मनोहर, इसी प्रकार– तपोवन, रजोगुण, सरोवर

विसर्गलोप सन्धि– एषः + चलति = एष चलति (यह चलता है), इसी प्रकार–अतः + एव = अतएव

सन्धियों का सम्यक् अभ्यास हो जाने के बाद शब्दों के मिलान हेतु निम्नलिखित समासों का अभ्यास करना चाहिए –अव्ययीभाव समास, भेद उपभेद सहित तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास, द्वन्द्वसमास।

यथा–

अव्ययीभाव समास–

हरौ इति – अधिहरि (हरि में)

कृष्णस्य समीपम् – उपकृष्णम् (कृष्ण के समीप)

तत्पुरुष समास–

समानाधिकरण तत्पुरुष समास (कर्मधारय समास)–

नीलम् उत्पलम् – नीलोत्पलम् (नीला है जो कमल)

कर्मधारय समास का द्विगु समास –

पञ्चानाम् गवानाम् समाहारः – पञ्चगवम् (पाँच गायों का समाहार)

व्यधिकरण तत्पुरुष समास–

राज्ञः पुरुषः – राजपुरुषः (राजा का पुरुष)

यूपाय स्तम्भः – यूपस्तम्भः (यूप के लिए लकड़ी)

बहुव्रीहि समास–

पीतम् अम्बरम् यस्य सः – पीताम्बरः (पीला है वस्त्र जिसका)

द्वन्द्व समास –

माता च पिता च – पितरौ (माता और पिता)

इस प्रकार से क्रमशः उदाहरणसहित सभी समासों के सामान्य अध्ययन के उपरान्त शब्दरूपों को समझना चाहिए, जिसके अंतर्गत पुल्लिङ्ग में अकारान्त बालक, इकारान्त हरि, ईकारान्त सुधी, उकारान्त गुरु, ऊकारान्त प्रभू, ऋकारान्त कर्तृ आते हैं। स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त बालिका, इकारान्त मति, ईकारान्त नदी, उकारान्त धेनु, ऋकारान्त मातृ। नपुंसकलिङ्ग में अकारान्त ज्ञान, वारि, अस्थि, सुलु आदि शब्दों को याद करना चाहिए तथा इनके समतुल्य रूप चलने वाले शब्दों का अभ्यास करना चाहिए। सर्वनाम शब्द हेतु – अस्मद्, युष्मद्, सर्व, यत्, तद्, एतद्, भवत्, इदम्, अदस्, एकम्, इत्यादि शब्दों को तीनों लिङ्गों में स्मरण करना चाहिए। शब्दरूप स्मरण हेतु अनुवादचन्द्रिका पुस्तक की सहायता ली जा सकती है। शब्दरूपों का अच्छे से अभ्यास होने उपरान्त लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, तथा लृट् लकार में व्यवहार में आने वाली 200 धातुओं (क्रियावाची शब्दों) का अच्छे से अभ्यास करना चाहिए। इसके बाद सामान्य कारक का अभ्यास करके सभी विभक्तियों में सामान्य वाक्यनिर्माण का अभ्यास करना चाहिए। साथ में संख्यावाची व समयवाची शब्दों का भी वाक्य में प्रयोग सीखना चाहिए। इसके लिए संस्कृत के कारक प्रकरण को अच्छे से पढ़कर धीरे धीरे सरल वाक्य बनाते हुए सभी विभक्तियों के वाक्यों को बनाने का प्रयास करना चाहिए। वाक्यनिर्माण शब्दज्ञान के साथ ही प्रारम्भ कर देना चाहिए। इस प्रकार से पढ़ने पर सामान्य व्यक्ति संस्कृत भाषा में सामान्यकुशलता प्राप्त कर सकता है। वह सामान्य संस्कृत लिख व पढ़ सकता है। सामान्य संस्कृत सम्भाषण भी कर सकता है।

यथा–

लट् लकार

(वर्तमानकाल अर्थ में – वह पढ़ता है– सः पठति।)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम	पठामि	पठावः	पठामः

लृट् लकार

(भविष्यकाल अर्थ में – वह पढ़ेगा – सः पठिष्यति।)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार

(आज्ञा अर्थ में – आप पढो – भवान् पठतु।)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम	पठानि	पठाव	पठाम

लङ् लकार

(भूतकाल अर्थ में – उसने पढ़ा – सः अपठत्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलङ् लकार (चाहिए के अर्थ में – उसे पढना चाहिए– सः पठेत्।)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम	पठेयम्	पठेव	पठेम

सामान्य संस्कृत सीख जाने पर संस्कृत भाषा में प्रौढता की ओर बढना चाहिए। जिसके लिए पाणिनि व्याकरण को अष्टाध्यायी अथवा सिद्धान्तकौमुदी के क्रमानुसार पढ़ना चाहिए। साथ ही अमरकोश का भी स्वाध्याय करना चाहिए। जैसा कि कहा गया है– "अष्टाध्यायी जगन्माता अमरकोषो जगत्पिता"। अष्टाध्यायी और अमरकोष का सम्यग् ज्ञान ही व्यक्ति को संस्कृतज्ञ बनाता है। अष्टाध्यायी के सूत्रों को ही भट्टोजी दीक्षित द्वारा विभिन्न प्रकरणों में सिद्धान्तकौमुदी के रूप में व्यवस्थित किया गया है। सिद्धान्तकौमुदी के प्रकरणों के अन्तर्गत भाषा के मुख्य तीन तत्त्व वर्ण, शब्द व वाक्य हेतु निम्नलिखित प्रकरण हैं –

क) वर्ण परिचय व वर्णमिलान हेतु – संज्ञाप्रकरण, सन्धि प्रकरण।

ख) शब्दज्ञान के प्रकरण – शब्द ज्ञान पाणिनिव्या. करण का सबसे दीर्घतम भाग है जिसके लिए सिद्धान्तकौमुदी में अलग अलग प्रकरण हैं।

1. संज्ञा व सर्वनाम शब्दमिलान हेतु समास प्रकरण।
2. संज्ञा व सर्वनाम शब्दरूपनिर्माण हेतु षड्लङ्ग. प्रकरण।
3. निपातशब्द हेतु अव्ययप्रकरण।
4. संज्ञाशब्दनिर्माणविधि जानने हेतु – तद्धितप्रकरण। तद्धितप्रकरण में 16 प्रकार के प्रधान अर्थों में प्रत्यय होते हैं जो क्रमशः – अपत्यादिविकारान्ता. र्थाः साधारणप्रत्ययाः, अपत्याधिकारः, रक्ताद्यर्थकाः, चातुरर्थिकाः, शैषिकाः, विकाराद्यर्थकाः, ठगाधि. कारः, यदधिकारः, छयतोधिकारः, ठञाधिकारः, त्वतलोरधिकारः, भवनाद्यर्थकाः, मत्वर्थीयाः, प्राग्दशीयाः, प्रागिवीयाः, स्वार्थिकाः तक हैं।
5. संज्ञा शब्दों के स्त्रीलिङ्ग जानने हेतु – स्त्रीप्रत्यय प्रकरण।
6. आख्यात शब्द अर्थात् धातुनिर्माण ज्ञान हेतु दशगणप्रकरण (भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवा.

दि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि, चुरादि)

7. लकार्थज्ञान हेतु एकादशलकारार्थ प्रक्रिया (ण्यन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुक्, नामधातु, कण्ड्वादि, आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म, कर्मकर्तृ, लकारार्थ)।

8. धातुओं के विभिन्न अर्थों के ज्ञान हेतु कृत्य प्रक्रिया पूर्वकृदन्तप्रक्रिया, उत्तरकृदन्त प्रक्रिया तथा उणादि गण प्रक्रिया पाठक को जानना चाहिए। शब्दों के लिङ्गों के सम्यक् ज्ञान हेतु पाठक को पाणिनि का लिङ्गानुशासन नामक ग्रन्थ पढना चाहिए। इस प्रकार से शब्दों के इन सभी प्रकरणों को पढ़ने पर व्यक्ति संस्कृत भाषा में शब्दशिल्पज्ञ की योग्यता प्राप्त कर लेता है।

उपसर्ग, प्रत्यय एवं अव्यय के प्रयोग से एक क्रिया और शब्द से अनेक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे – आगम, आगमन , प्रत्यागमन, अवगति, संगति, गति, गंतव्य, गमनीय, गमन, निगम, समागम, संगम, निर्गत, निर्गम, प्रगत, उद्गम, प्रगति, अधोगति, ऊर्ध्वगति, अनागत, तथागत, समागत, अधिगम, सुगम, दुर्गम, सुगति, सद्गति, दुर्गति, कुगति, संगतीकरण आदि।

यथा–

उपसर्ग–

आ + गमन = आगमनम् (आना)

प्रति + गमन = प्रत्यागमनम् (लौटना)

सम् + गति = संगतिः (साथ चलना)

प्रत्यय

कृत् प्रत्यय–

कृञ् + तृच् = कर्ता (कार्य को करने वाला)

अट् + तुमुन् = अटितुम् (भ्रमण के लिए)

तद्धित प्रत्यय–

अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय– अश्वपति + अण् = आश्वपतम् (अश्वपति की संतान)

रक्ताद्यार्थक तद्धित प्रत्यय– कषाय + अण् = काषायम् (कषाय रंग से रंगा हुआ)

चातुरर्थिक तद्धित प्रत्यय– उदुम्बर + अण् = औदुम्बरः (उदुम्बर का क्षेत्र)

शैषिक तद्धित प्रत्यय– चक्षुष् + अण् = चाक्षुषम् (चक्षु से देखा हुआ)

विकाराद्यर्थक तद्धित प्रत्यय– आश्मन् + अण् = आश्मः (पत्थर से बना हुआ पदार्थ)

ठगधिकार तद्धित प्रत्यय– अक्ष + ठक् = आक्षिकः (पासों से खेलने वाला)

यदधिकार तद्धित प्रत्यय– रथ + यत् = रथ्यः (रथ को खींचकर आगे ले जाने वाला घोड़ा)

छयतोधिकार तद्धित प्रत्यय– शङ्कु + यत् = शङ्कव्य (खूँटी ए लिए उपयोगी लकड़ी)

ठञधिकार तद्धित प्रत्यय– सप्तति + ठञ् = साप्तिकम् (सत्तर से खरीदी गयी वस्तु)

त्वतलोरधिकार तद्धित प्रत्यय– ब्राह्मण + वति = ब्राह्मणवत् (ब्राह्मण के समान)

भवनाद्यर्थक तद्धित प्रत्यय– मुदग + ख = मौद्गीनम् (मूंग धान्य का उत्पत्तिस्थान खेत)

मत्वर्थीय तद्धित प्रत्यय– गो + मतुप् = गोमान् (गौओं वाला व्यक्ति)

प्राग्दिशीया तद्धित प्रत्यय– किम् + तसिल् = कुतः (किस कारण से)

प्रागिवीया तद्धित प्रत्यय– आढ्य + तमप् = आढ्यतमः (सबसे अधिक धनी)

स्वार्थिक तद्धित प्रत्यय– अश्व + कन् = अश्वकः (घोड़ा)

स्त्री प्रत्यय

अज + टाप् = अजा (बकरी)

ग) वाक्यनिर्माण हेतु – कारक प्रकरण।

इनके सामान्य स्वाध्याय के उपरान्त व्याकरण में विशेषज्ञता हेतु व्यक्ति को महाभाष्य इत्यादि व्याकरण ग्रन्थों का भी स्वाध्याय करना चाहिए।

कारक

कर्ता कारक – रामः पठति (राम पढ़ता है।)

कर्म कारक – रामः पुस्तकं पठति (राम पुस्तक पढ़ता है।)

करण कारक – रामः उपनेत्रेण पुस्तकं पठति (राम उपनेत्र से पुस्तक पढ़ता है।)

सम्प्रदान कारक – सः भिक्षुकाय धनं ददाति (वह भिक्षुक के लिए धन देता है।)

अपादान कारक – वृक्षात् पत्रं पतति (वृक्ष से पत्ता गिरता है।)

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध) – रामस्य पितुः नाम दशरथः आसीत। (राम के पिता का नाम दशरथ था।)

अधिकरण कारक – सः कटे आस्ते (वह चटाई पर बैठता है।)

प्रारम्भिक संस्कृत में उपयोग में आने वाले सामान्य वाक्य –

1. भवान् कथं अस्ति ? (आप कैसे हैं? – पुल्लिङ्ग में)
2. भवती कथं अस्ति ? (आप कैसी हैं? – स्त्रीलिङ्ग में)
3. अहं सम्यक् अस्मि। (मैं ठीक हूँ।)
4. भवतः नाम किम् ? (आपका नाम क्या है ?)
5. भवत्याः नाम किम ? (आपका नाम क्या है ?– स्त्रीलिङ्ग में)
6. मम नाम .....अस्ति। (मेरा नाम ..... है।)
7. भवतः पितुः नाम किम् ? (आपके पिता का नाम क्या है?)
8. मम पितुः नाम .....अस्ति (मेरे पिता का नाम .... है।)
9. भवतः मातुः नाम किम्? (आपकी माता का नाम क्या है ?)
10. मम मातुः नाम .....अस्ति। (मेरी माता का नाम ..... है।)
11. भवान् कस्मिन् ग्रामे/नगरे निवसति? (आप किस गाँव में रहते हैं?)
12. अहं .....ग्रामे/नगरे निवसामि। (मैं ..... गाँव में रहता हूँ।)
13. भवान् किं कार्यं करोति ? (आप क्या काम करते हैं?)
14. अहं शिक्षकः/शिक्षिका अस्मि। (मैं शिक्षक हूँ।)
15. भवान् भोजनं कृतवान् वा ? (क्या आपने भोजन किया ?)
16. आम् अहं भोजनं कृतवान्। (हाँ। मैंने भोजन किया।)
17. भवती भोजनं कृतवती वा ? (क्या आपने भोजन किया ?)
18. आम् अहं भोजनं कृतवती (हाँ। मैंने भोजन कर लिया है।)
19. भवतः गृहे सर्वे कुशलिनः सन्ति वा ? (क्या आपके घर में सभी कुशल हैं ?)
20. आम् मम गृहे सर्वे कुशलिनः सन्ति। (हाँ। मेरे घर में सभी कुशल हैं।)

संस्कृत भाषा को अन्य भाषाओं की जननी भी कहा जाता है। यही कारण है कि आज भी प्रायः सभी भाषाओं में संस्कृतभाषा के शब्द मिलते हैं। दक्षिण के द्रविण परिवार की भी भाषाओं ने संस्कृत के शब्दों को अधिक मात्रा में ग्रहण कर स्वयं को सम्पन्न किया है। हिन्दी, मराठी, नेपाली, मैथिली, कोंकणी, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी, कश्मीरी, बंगाली, असमिया, उड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू इत्यादि भाषाएँ संस्कृत से ही निकली हैं।